तेरह वर्ष माया मिने, था ऊपर लौकिक बोझ ।
श्री राज तरफ रहत है, रमें बीच कौसर हौज ॥१॥

संवत् १६९० से लेकर १७०३ तक इन तेरह वर्षों में श्री मेहेराज के ऊपर घर का सांसारिक बोझ था। श्री देवचन्द्र जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुन कर श्री राजजी के स्वरूप श्रृंगार और २५ पक्षों की चितवनी में उनका चित्त लगा रहता था ।

चर्चा नित विचारहीं, मन में बड़ो विलास ।
नित प्रते श्री राज सों, करत विनोद के हांस ॥२॥

जो श्री देवचन्द्र जी के मुख से चर्चा सुनते थे उस पर नित्य विचार करते थे जिससे उनको बहुत सुख होता था। श्री देवचन्द्र जी को धाम का धनी जान कर उनसे कई प्रकार के हांस विनोद भी करते थे ।

एक दिन श्री मेहेराज को, दिल उपजो एह विचार ।
हम आये हैं अरस से, भेजे परवरदिगार ॥३॥

एक दिन श्री मेहेराज ठाकुर के दिल में यह विचार आया कि हम सब की आत्मा परमधाम से आई है तथा हम सबको श्री राजजी महाराज ने खेल देखने को भेजा है ।

तो हमारी हुज्जत राज सों, कछु न चलत ।
हम क्यों न देखें धाम को, अपनी जो बीतक इत ॥४॥

जब हम सब की आत्मा के धनी एक श्री राजजी महाराज ही हैं तो इस खेल में मुझे परमधाम तथा अपनी परआतम क्यों नहीं दिखाई देती ? क्या हमारा खेल में श्री राजजी से नाता नहीं रहा ?

श्री देवचन्द्र जी देखत, श्री धाम के निसान ।
सो हमारे आगे कहत हैं, कर देत पहिचान ॥५॥

श्री देवचन्द्र जी परमधाम को देखकर ही परमधाम का वर्णन करते हैं तथा हमारे सामने सब वर्णन करके पहचान कराते हैं ।

हमारा धनी धाम का, क्या तिन से ए न होय ।
हमें अरस अजीम की, ठौर दिखावें सोय ॥६॥

श्री देवचन्द्र जी महाराज के धाम धनी वही हैं तथा मेरे भी वही हैं तो मुझ को अखंड परमधाम के सब निशान क्यों नहीं दिखाते ?

Nijanand App

सो हमारा खेल में, इतना भी न चलत ।
तो क्यों कहिए हम धाम के, अपनी न देखें बीतक इत ॥७॥

यदि हम इस खेल के अंदर परमधाम को नहीं देख सकते हैं तथा यदि हम अपनी परआतम को भी इस खेल में नहीं देख सकते तो हम कैसे ब्रह्मसृष्टि हैं ?

पर हममें हैं अवगुन, तिस वास्ते अन्तराय ।
जब अवगुन हम काढ़हीं, तब क्यों न देखें हम ताय ॥८॥

निश्चय ही मेरे अंदर अवगुण हैं, इस वास्ते मुझे परमधाम दिखाई नहीं देता हैं । जब मैं अपने अवगुण निकाल लूँगा तो मुझे भी परमधाम दिखाई देने लगेगा ।

तिस वास्ते अवगुण को, ढूंढन लगें जब ।
नजरों जो ही आइया, काढ़ दिए तब सब ॥९॥

इसलिए श्री मेहेराज ठाकुर अपने अवगुण ढूंढने लगे, जो जो अवगुण मिला उसे निकालते चले गए।

श्री देवचन्द्र के आगे, आय अरज करते ए ।
मेरे अवगुण मुझको, काढ़ देओ सब इन्द्रीयन के ॥१०॥

फिर श्री देवचन्द्र जी के आगे आकर भी यही विनती करते हैं कि हे धनी ! मेरी इन्द्रियों के अवगुण अपनी कृपा से दूर कर दीजिए ।

तब देते उत्तर, तिन में न कोई अवगुण ।
तूं निरमल आत्मा धाम की, इन्द्रावती उत्पन्न ॥११॥

तब श्री देवचन्द जी उत्तर देते हैं कि तेरे तन में परमधाम की इन्द्रावती जी की आत्मा है और आत्मा सदा ही गुण-अवगुणों से रहित, निर्मल होती है ।

फेर अपने दिल में, करते एह विचार ।
श्री धाम धनी यों कहत हैं, मोहे चलना इन पर ॥१२॥

फिर दिल में यकीन लेकर यह विचार करते हैं कि जो धाम के धनी कहते हैं, मुझे उसी पर चलना है।

सुनत श्री मुख चरचा, श्री देवचन्द्र जी की जब ।
चरचा की चरचा, करत साथ आगे सब ॥१३॥

धनी श्री देवचन्द जी के मुखारबिन्द से जो चर्चा सुनते हैं तो सुनी हुई चर्चा को दुबारा सुन्दर साथ को सुनाते हैं ।

Nijanand App

वचन वर्णन करत हैं, लेत हैं अपने सिर ।
ए मोको जो कहत हैं, मोहे चलना इन पर ॥१४॥

और सदा यही विचारते हैं कि जो सतगुरू महाराज चर्चा सुनाते हैं, मेरी ही आतम को निर्मल करने के लिए सुनाते हैं । इसलिए वह सारी चर्चा को अपने ही सिर पर लेकर उस पर अमल करते हैं ।

यह विचार करके, साथ को दिखावत ।
अपने दिल विचारत, ए मोहे करना इत ॥१५॥

चर्चा सुनकर दिल में विचारते हैं और सुन्दरसाथ को कहने से पहले स्वयं करके दिखाते हैं ।

तिस वास्ते अपने मन पर, करते बड़ा जुलम ।
कस्त अपने आकार को, जगावें अपनी आतम ॥१६॥

इस वास्ते अपने मन को कसौटी पर रख कर अपनी सभी इच्छाओं को मिटा देते हैं और अपनी आतम को जगाने के वास्ते शरीर से कसनी भी करने लगे ।

उतरता अहार घटाइया, रहूया पैसे भर दोए ।
बल घटा इन्द्रियन को, सूक चला आकार सोए ॥१७॥

पेट भर कर भोजन करना भी एक अवगुण समझ कर अपना आहार इतना घटा दिया कि केवल दो पैसे भर भोजन लेने लगे जिससे इन्द्रियों की शक्ति घट गई और शरीर भी सूख गया ।

नैनों नीर झरत हैं, जब लों चरचा धाम ।
रंग जरदी का आइया, और न सूझे काम ॥१८॥

ऐसी दशा में जब चर्चा सुनने जाते हैं तो आतम निर्मल होने के कारण वचन चुभते हैं, जिससे नयनों से नीर झरता ही रहता है । पूरा भोजन न करने के कारण देह का रंग जर्द हो गया । फिर भी परमधाम नजर नहीं आया । अब और कोई उपाय भी नहीं सूझता ।

ढूंढत फिरे अवगुन को, अजुं मेरे रहे और ।
यह मेरे घर में रहूया, पहुंचाऊं हादी ठौर ॥१९॥

फिर अपने अवगुण ढूंढने लगे कि निश्चय ही मेरे अन्दर अभी अवगुण हैं, तभी परमधाम नजर नहीं आया । मेरे घर में सोने चांदी और वस्त्र आभूषण हैं, ये भी एक अवगुण है । मुझे इन्हें भी सद्गुरू महाराज के चरणों में पहुंचा देना चाहिए ।

Nijanand App

तब घर के भूखन, कोई रह्या स्त्री के पास ।
सो भी चित्त में अवगुन, आया दिल में खास ॥२०॥

उन्होंने वस्त्र आभूषणों को खास अवगुण जान कर सद्गुरू महाराज के चरणों में पहुंचा दिया ।

तिनको भी काढ़ के, अरज करे आगे हादी ।
तब अवगुन काढ़ के, ए दिल आवे साहिदी ॥२१॥

ऐसा करके फिर सद्गुरू महाराज के चरणों में अर्जी की कि हे धनी ! अब मेरे अन्दर और क्या अवगुण हैं ? कृपा करके निकाल दीजिए ताकि मेरे मन को शान्ति हो ।

मेरे आगे मन की, मैं देखों परख ।
बाजार ही में चलते, ए कहूं चले ले हरख ॥२२॥

तब मन में आया कि मैं अपने मन की परीक्षा तो लूं कि मेरा मन बाजार में चलते समय कोई चाहना लेकर भटकता तो नहीं है ।

परख ऐसी करें मन की, खीजे बहू बचन ।
अजहूं रही सरीखी, मान रे चण्डाल मन ॥२३॥

अपने मन को परखने के लिये बाजार में चलते समय यदि मन में कोई चाहना भी आ जाती है तो खीझ-खीझ कर मन को फटकारते भी हैं कि हे चाण्डाल मन ! क्या तूं अब तक इस मिथ्या माया से तृप्त नहीं हुआ ? क्या तूं इस प्रकार माया में भटकता रहेगा ?

इन भांत अंग को, देत कसौटी जोर ।
अरज करते अंग की, चित्त न हुआ मरोर ॥२४॥

इस प्रकार अपने अवगुण निकालने के लिए अपने अंगों को कठोर कसौटी पर परखने पर भी चित्त धनी के चरणों में नहीं लगा तो सद्गुरू महाराज के चरणों में आकर अर्जी करते हैं कि मेरे अवगुण निकाल दो ।

राह माहें चलते, कोई सामें मिल्या यार ।
तो मुंह फिराय के चलें, जिन बीच पड़े परवरदिगार ॥२५॥

यदि राह में चलते समय कोई मित्र सामने से आता हुआ नजर आता है तो उससे मुंह फिराकर चलते हैं कि जितने समय तक मैं इससे बातें करूंगा उतने समय तक मैं अपने धाम धनी के चरणों से जुदा हो जाऊंगा ।

Nijanand App

तब श्री धाम मुंह आगे, फिरवल्या गिरद ।
अपना आपा देखिया, किया आकार को रद ॥२६॥

इतनी कठिन कसौटी करने पर चितवनी करके रंग महल और परिकरमा तथा अपनी परआतम को देखा । इतने से आकार बिल्कुल क्षीण हो गया ।

तब बालबाई आए के, कह्या आगे श्री देवचन्द्र जी ।
श्री मेहेराज के आकार की, अरज आए करी ॥२७॥

श्री मेहराज ठाकुर की ऐसी दशा को देख कर बालबाई ने श्री देवचन्द्र के आगे उनके शरीर की बाबत विनती की ।

एक भाई पहिले चलिया, अब यह हुआ तैयार ।
तुम क्यों न कहत हो, डर नहीं लगत लगार ॥२८॥

हे धाम के धनी ! एक भाई गोवर्धन तो पहले ही धाम चल गये हैं और ये भी चलने को तैयार हैं। आप इनको क्यों नहीं समझाते हैं । क्या आपको इनके मरने का डर नहीं लगता है ।

तब श्री देवचन्द्र जी यें, सवाल किया मेहेराज ।
क्या है तेरे दिल में, सो मुझे कहो आज ॥२९॥

तब श्री देवचन्द्र जी की आज्ञा से बाल बाई श्री मेहेराज ठाकुर को बुलाकर लायी तो श्री देवचन्द्र जी ने उनसे पूछा कि तेरे दिल में क्या चाहना है जो इतनी कसौटी कर रहे हो ? मुझे स्पष्ट बताओ ।

मेरे अवगुन मुझको, दिखाए देओ तुम ।
तब कह्या मुझको, क्या पहिचानत आतम ॥३०॥

श्री मेहेराज ठाकुर फिर विनती करते हैं कि हे धनी ! मेरे अंग के अवगुणों को बताइये । तब धनी श्री देवचन्द्र जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि तुमने आतम के सम्बन्ध से मुझे क्या पहचाना है ?

ब्रज की बातें सुनते, पानी झरत है नैन ।
तब श्री देवचन्द्र जी कह्या, क्यों रहे तन सुनते बैन ॥३१॥

यदि मेरे कहे अनुसार तुम्हारी आत्मा परमधाम की निर्मल आत्मा नहीं है तो जब तुम ब्रज, रास की चर्चा सुनते हो तो तुम्हारे नेत्रों से पानी क्यों झरता है और क्या तुम श्री राजजी के हुकम के बिना शरीर छोड़ सकते हो ? यदि यह तुम्हारे वश में है तो तुमने शरीर क्यों नहीं छोड़ दिया ।

Nijanand App

कहूया मेरे आगे धाम की, बात करो जब तुम ।
तब पानी नैना झरे, सुख पाऊं इन हुकम ॥३२॥

हे धनी ! जब मैं आपके मुख से परमधाम की चर्चा सुनता हूं तो मुझे दुःख होता है जिससे मेरे नेत्रों से नीर झरता है । यदि आप हुकम करें तो मैं भी परमधाम देख सकता हूं ।

तब बालबाई ने कहूया, क्या पहिचान धनी धाम ।
जो ए बात लौकिक है, तिनसे होवे पूरन मनोरथ काम ॥३३॥

तब बालबाई ने कहा कि तुमने फिर धाम धनी को पहचाना ही क्या है । परमधाम दिखाना कोई संसारी चमत्कारिक लीला नहीं है, जो तेरी मनोकामना पूर्ण हो जाय ।

जो पहिचान होवे सरूप की, तो पलक न रहवे नैन ।
प्रदक्षिना फिरता रहे, और मुख न निकसे बैन ॥३४॥

यदि तुम इनको सतगुरू के स्थान पर धाम धनी के रूप में पहचान लेते तो एक पलक के लिए भी इनसे दूर नहीं होते और हर पल सेवा में ही रहते तथा कुछ भी मांगने की इच्छा नहीं होती ।

जो मुझे देखे धनी धाम का, तो पलक न फेरे नैन ।
रात दिन दे प्रदक्षिना, मुख ना निकसे बैन ॥३५॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने अपने मुख से ही कह दिया कि यदि तुम मुझे अपने धाम धनी के रूप में पहचान लेते तो एक पलक के लिए भी मेरे चरणों से दूर नहीं होते बल्कि हर पल सेवा में लगे रहते तथा कुछ मांगने की भी चाहना नहीं रहती ।

ए अवगुन नहीं तेरे, क्या कहत ए सुख ।
अगिनत देखे अवगुन, कहूयो ना जाय या मुख ॥३६॥

तेरी आतम परमधाम की है जिससे तुम अखण्ड चर्चा के अपार सुख लेते हो । तुम्हारे अन्दर कोई भी अवगुण नहीं है । यदि तुम अवगुण ही देखना चाहते हो तो इतना भारी अवगुण तुम्हारे अन्दर है, जिसे मुख से नहीं कहा जा सकता क्योंकि आतम के सम्बन्ध से तुमने धनी न मानकर सतगुरू ही माना है ।

श्री देवचन्द्र जी पूछिया, क्या है तेरे मन में ।
तुम देखो मैं क्यों न द्रेखूं, सो क्यों न होए मुझ सें ॥३७॥

तब सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि अब तूं सच-सच बता कि तेरी चाहना क्या है ? तब श्री मेहराज ठाकुर ने कहा कि आपको परमधाम दिखता है, मुझे क्यों नहीं दिखता है ?

Nijanand App

यह वस्त हुकम की, सो होवे एक ही ठौर ।
मोहे उठाय तुम बैठो, पर ना होवे कहूं और ॥३८॥

तब धनी श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि यह बात मेरे वश की नहीं है । यह बात श्री राजजी के हुकम की है । श्री राजजी महाराज एक समय में एक ही मोमिन के दिल में बैठते हैं और यदि तुम अभी चाहते हो तो मुझे अभी मार दो तब श्री राजजी महाराज तुम्हारे तन में आकर बैठ जायेंगे अन्यथा जब तक मेरा तन है तब तक श्री राजजी अन्य किसी तन में नहीं बैठ सकते ।

तब चित पीछा पड़ा, हुआ मनोरथ भंग ।
फेर के विचार किया, श्री देवचन्द्र जी संग ॥३९॥

तब उनके मन को बहुत दुःख लगा और उस चाहना को मन से निकाल दिया और वह मनोरथ उस समय पूर्ण नहीं हुआ । तब बालबाई ने श्री देवचन्द्र जी से मिलकर श्री मेहराज ठाकुर के लिए विचार विमर्श किया ।

इन्हें काम दीजे माया का, तब पीछे हटे चित ।
कह्या में हुकम करत हों, जाओ श्री मेहेराज तित ॥४०॥

तब बालबाई ने कहा कि हे धाम धनी ! इनको सांसारिक सेवा का काम दे दीजिए जिससे इनका चित्त वैराग्य से हट जाय । तब श्री देवचन्द्र जी ने अपने एक कार्य के लिए श्री मेहराज ठाकुर को हुकम दिया ।

तब गुजरात भेजिया, एक बहाना ले ।
जब चले गुजरात को, जोस फिरा तिन से ॥४१॥

कुछ धार्मिक ग्रन्थों को मंगाने का बहाना लेकर अहमदाबाद भेजा । तब अहमदाबाद चलते समय अपने व्यर्थ के विचारों को हटा दिया ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, सुनियो यह बीतक ।
आगे फेर कहत हों, जो आज्ञा है हक ॥४२॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि हे सुन्दर साथ जी ! इस बीतक को सुनकर विचारना फिर जो श्री राजजी महाराज का हुक्म हुआ उस वृतान्त को कहता हूं ।

(प्रकरण १४, चौपाई ६२०)

Nijanand App